५. मधुबन

– अनुराग वर्मा

सुबह का समय था । मैं डॉक्टर रामकुमार वर्मा जी के प्रयाग स्टेशन स्थित निवास ''मधुबन'' की ओर पूरी रफ्तार से चला जा रहा था क्योंकि १० बजे उनसे मिलने का समय तय था ।

वैसे तो मैंने डॉक्टर साहब को विभिन्न उत्सवों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में देखा था, परंतु इतने निकट से मुलाकात करने का यह मेरा पहला अवसर था । मेरे दिमाग में विभिन्न विचारों का ज्वार उठ रहा था– कैसे होंगे डॉक्टर साहब, कैसा व्यवहार होगा उस साहित्य मनीषी का, आदि । इन तमाम उठते और बैठते विचारों को लिए मैंने उनके निवास स्थान 'मधुबन' में प्रवेश किया । काफी साहस करके दरवाजे पर लगी घंटी बजाई । नौकर निकला और पूछ बैठा, ''क्या आप अनुराग जी हैं ?'' मैंने उत्तर में सिर्फ 'हाँ' कहा । उसने मुझे ड्राइंग रूम में बिठाया और यह कहते हुए चला गया कि ''डॉक्टर साहब आ रहे हैं ।'' इतने में डॉक्टर साहब आ गए । ''अनुराग जी, कैसे आना हुआ ?'' आते ही उन्होंने पूछा ।

मैंने कहा, ''डॉक्टर साहब, कुछ प्रसंग जो आपके जीवन से संबंधित हैं और उनसे आपको जो महत्वपूर्ण प्रेरणाएँ मिली हों उन्हीं की जानकारी हेतु आया था ।''

डॉक्टर साहब ने बड़ी सरलता से कहा, 'अच्छा, तो फिर पूछिए ।'

प्रश्न : डॉक्टर साहब, काव्य-रचना की प्रेरणा आपको कहाँ से और कैसे प्राप्त हुई ? इस संदर्भ में कोई ऐसा प्रसंग बताने का कष्ट करें जिसने आपके जीवन के अंतरंग पहलुओं को महत्वपूर्ण मोड़ दिया हो।

उत्तर : पहले तो मेरे जीवन में समाज की अंध व्यवस्था के प्रति विद्रोह अपने आप ही उदित हुआ । सन १९२१ में जब मैं केवल साढ़े पंद्रह वर्ष का था, गांधीजी के असहयोग आंदोलन में पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवधानों से संघर्ष करते हुए मैंने भाग लिया । उस समय स्कूल छोड़ने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती थी मगर मध्य प्रदेश के अंतर्गत नरसिंहपुर में मौलाना शौकत अली साहब आए और बोले, ''गांधीजी ने कहा है कि अंग्रेजी की तालीम गुलाम बनाने का एक नुस्खा है ।'' तत्पश्चात आवाज तेज करते हुए कहने लगे, ''है कोई माई का लाल जो कह दे कि मैं कल से स्कूल नहीं जाऊँगा ।'' मैंने अपनी माँ के आगे बड़ी ही श्रद्धा से स्कूल न जाने की घोषणा कर दी । सभी लोग सकते में आ गए । बात भी अजीब थी कि उन दिनों एक डिप्टी कलेक्टर का लड़का विद्रोह कर जाए। लोगों ने बहुत समझाया, पिता जी की

परिचय

परिचय : अनुराग वर्मा जी ने हिंदी में विपुल लेखन किया है । आपकी भाषा धारा प्रवाह, सरल एवं आशय संपन्न होती है । आप हिंदी के जाने-माने लेखक हैं ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत पाठ में श्री अनुराग वर्मा ने प्रसिद्ध लेखक डॉ. रामकुमार वर्मा जी का साक्षात्कार लिया है । यहाँ अनुराग जी ने डॉ. वर्मा जी से उनकी काव्य रचना की प्रेरणा, लौकिक-पारलौकिक प्रेम, देश की राजनीतिक स्थिति आदि पर प्रश्न पूछें हैं । डॉ. वर्मा जी ने इन प्रश्नों के बड़ी बेबाकी से उत्तर दिए हैं ।

मौलिक सृजन

'कहानियों/कविताओं द्वारा मनोरंजन तथा ज्ञान प्राप्ति होती है,' इसपर अपने मत लिखो ।

नौकरी की बात कही परंतु मैं घर से निकल पड़ा क्योंकि गांधीजी का आदेश मानना था । इस प्रकार सर्वप्रथम मैंने सत्य एवं देश के लिए विद्रोह किया । तब तक मैं सोलह वर्ष का हो चुका था और राष्ट्रीय ध्वज लेकर नगर में प्रभात फेरी भी किया करता था । यह बात सन १९२१ की ही है और इसी समय मैंने देशप्रेम पर एक कविता लिखी । यही मेरी कविता का मंगलाचरण था ।

प्रश्न : आप मध्य प्रदेश से उत्तर प्रदेश कैसे आए ?

उत्तर : हिंदी प्रेम ने मुझे मध्य प्रदेश से उत्तर प्रदेश आने को प्रेरित किया क्योंकि उन दिनों नागपुर विश्वविद्यालय में हिंदी नहीं थी । सन १९२५ में मैंने इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की, तत्पश्चात उच्च शिक्षा हेतु प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया । मैंने इसी विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की ।

मैंने देखा कि डॉक्टर साहब के चेहरे पर गंभीरता के भाव साफ प्रतिबिंबित हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे अपने अतीत में खो-से गए हैं । मैंने पुनः सवाल किया ।

प्रश्न : डॉक्टर साहब, प्रायः ऐसा देखा गया है कि कवियों एवं लेखकों के जीवन में उनका लौकिक प्रेम, पारलौकिक प्रेम में बदल गया। क्या आपके साथ भी ऐसा हुआ है ?

उत्तर : अनुराग जी, प्रेम मनुष्य की एक प्राकृतिक प्रवृत्ति है । सन १९२६ में मेरा विवाह हो गया और मैं गृहस्थ जीवन में आ गया । अब मुझे सात्विकता एवं नैतिकता से प्रेम हो गया । मैंने इसी समय, यानी सन १९३० में ''कबीर का रहस्यवाद'' लिखा । इतना अवश्य है कि मेरे जीवन के कुछ अनुभव कविता के माध्यम से प्रेषित हुए। मुझे बचपन से ही अभिनय का शौक था और प्रायः उत्सवों के अवसर पर नाटकों में भाग भी लिया करता था ।

मैंने बात आगे बढ़ाई और पूछा ।

प्रश्न : डॉक्टर साहब, देश की राजनीतिक स्थिति के बारे में आपकी क्या राय है ?

उत्तर : मैं राजनीति से हमेशा दूर रहा क्योंकि आज की राजनीति में स्थिरता का अभाव है । यद्यपि मैं नेहरू जी, शास्त्री जी, इंदिरा जी एवं मोरारजी भाई से मिल चुका हूँ और उनसे मेरा परिचय भी है, परंतु मैंने राजनीति से अपने आपको सदा दूर रखा, मुझे राजनीति में कोई रुचि नहीं है । मैं साहित्यकार हूँ, और साहित्य चिंतन में विश्वास रखता हूँ ।

इतना कहते हुए डॉक्टर साहब ने घड़ी देखी और बोले, ''अनुराग जी, मुझे साढ़े ग्यारह बजे एक कार्य से जाना है ।'' तत्पश्चात उन्होंने मुझे एक कुशल अभिभावक की भाँति आशीर्वाद देते हुए विदा किया ।

—o—

श्रवणीय

यू-ट्यूब पर संत कबीर के दोहे सुनो और सुनाओ ।

संभाषणीय

'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' पर पथनाट्य प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

साक्षात्कार लेने के लिए किन-किन प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग हो सकता है, सूची तैयार करो । प्रत्येक शब्द से एक-एक प्रश्न बनाकर लिखो ।

पठनीय

द्विभाषी शब्दकोश पढ़कर उसके आधार पर किसी एक पाठ का द्विभाषी शब्दकोश बनाओ ।

शब्द वाटिका

संगोष्ठी = किसी विषय पर विशेषज्ञों का चर्चासत्र

तालीम = शिक्षा, उपदेश

मुहावरे

ज्वार उठना = विचारों की हलचल

सकते में आना = घबराना, अति भयभीत होना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

रामकुमार जी के जीवन की घटनाएँ

- गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग – ______
- विवाह – ______
- १९२५ – ______
- १९३० – ______

(२) कारण लिखो :

१. डॉक्टर साहब का राजनीति से दूर रहने का कारण–

२. डॉक्टर साहब का मध्यप्रदेश से उत्तर प्रदेश आने के लिए प्रेरित होने का कारण –

(३) कृति करो :

पाठ में प्रयुक्त भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों के नाम लिखो ।

----

(४) कृति पूर्ण करो :

गृहस्थ जीवन में इनसे प्रेम हुआ

- ______
- ______

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों से कृदंत/तद्धित बनाओ :

मिलना, ठहरना, इनसान, शौक, देना, कहना, भाव, बैठना, घर, धन

उपयोजित लेखन

अपने विद्यालय में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह का प्रमुख मुद्दों सहित वृत्तांत लेखन करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

अंतरजाल से डॉ. रामकुमार वर्मा जी से संबंधित अन्य साहित्यिक जानकारियाँ प्राप्त करो ।

IXN6HH